दिल्ली पब्लिक स्कूल जम्मू
सत्र 2024-2025
अर्द्धवार्षिक परीक्षा अभ्यास पत्र

कक्षा: आठवीं **विषय : संस्कृत**

पाठ्यक्रम :--

- **पाठ – 2 से 4 तक**
- **शब्द रूपाणि**
- **संस्कृत संख्या 1 - 60**
- **संस्कृत अनुवाद**

प्रश्न-1) एकपदेन उत्तरत – **(एक शब्द में उत्तर दीजिए।)**

क) जनाः कदा उत्तिष्ठेयुः ?
ख) शिक्षायाः उद्देश्यं किं वर्तते ?
ग) धैर्यं कः नाश्ते ?

प्रश्न-2) मञ्जूषातः उचितपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। (मञ्जूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।)
[परित्यजन्ति, शोक, शयनम् , धारयेयुः]

क) रात्रौ एव _____ कुर्यात् ।
ख) नास्ति _____ समो रिपुः।
ग) स्नानं कृत्वा स्वच्छानि वस्त्राणि _____।

प्रश्न-3) पूर्ण वाक्येन उत्तरत – **(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए।)**

क) मानव का शत्रु कौन है ?
ख) देशभक्तों का क्या करना चाहिए ?
ग) महापुरुष सर्वश्रेष्ठ धन किसको मानते हैं ?

प्रश्न-4) 'क' स्तम्भस्य कर्तृपदैः सह 'ख' स्तम्भं मेलयत- ('क' स्तंभ के कर्ता पदों के साथ 'ख' स्तंभ को मिलाइए।)

'क'	**'ख'**
i) त्यागं कुर्वन्ति	यथेष्टम्
ii) आहूय	तेज़ गति से
iii) यथा इच्छा तथा	बुलाकर
iv) वेगेन	परित्यजन्ति

प्रश्न -5) प्रत्ययप्रयोगं संस्कृत अनुवादं कुरुत। (प्रत्यय का प्रयोग करके संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए।)

(क) मैं आप्टे के पास जाकर पढ़ता हूँ।
(ख) वह दौड़कर घोड़े पर चढ़ता है।

प्रश्न -6) निम्नलिखित शब्दानां प्रकृति-प्रत्ययं पृथक् कुरुत। (निम्नलिखित शब्दों के प्रकृति-प्रत्यय पृथक् कीजिए।)

क) पीत्वा
ख) पठितुम् =

प्रश्न-7) अधोलिखितवाक्यानि विधिलिङ्लकारे परिवर्तयत। (निम्नलिखित वाक्यों को विधिलिङ्लकार में बदलिए।)

(क) ते स्वपाठम् अस्मरन्।
(ख) छात्राः सदा सत्यम् अवदन्।
(ग) वयं व्यायामं कुर्मः।

प्रश्न-8) संस्कृतेव संख्या लिखत -- (संस्कृत में संख्या लिखिए।)
15, 22, 30, 36, 41, 45, 50, 53, 57, 60

प्रश्न-9) अधोलिखितविकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं (✔/❌) चिनुतः।
क) सुबह सही समय पर उठना चाहिए।
ख) समय पर विद्यालय नहीं जाना चाहिए।
ग) संतुलित भोजन करना चाहिए।
घ) खेलते समय मिलों से झगड़ा करना चाहिए।
ङ) देर रात तक टी० वी० देखना चाहिए ।
च) रात्रि में यथासमय सो जाना चाहिए।

प्रश्न -10) ' बालक ' शब्द का रूप लिखिए।

प्रश्न -11) अपनी पाठ्य पुस्तक से एक श्लोक लिखिए ।

प्रश्न-12) अधोलिखितश्लोकानि अनुवादं कुरुत। (निम्नलिखित श्लोक का अनुवाद कीजिए।)

(क) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढ़ैः, पाषाणखण्डेषु, रत्नसंज्ञा विधीयते ।।

(ख) न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं, न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः।
व्यवहारेण मित्राणि, जायन्ते रिपवस्तथा ।।